सभ्यता और जीवन

—'मुकुल'

किशोरों के लिए कविताएं

सभ्यता और जीवन

।। सन १९८७ — ८९ की कविताएँ ।।

हृदय सिंधु मति सीप समाना । स्वाति सारदा कहहिं सुजाना ।।
जौं बरषइ, बर बारि बिचारू । होहिं कबित मुकुतामनि चारू ।।

-गोस्वामी तुलसीदास

अमरेन्द्र कुमार 'मुकुल'

© MUKUL
SABHAYATA AUR JIVAN
(Poems From 27-2-87 to 4-9-89)
AMARENDRA KUMAR 'MUKUL'
मुद्रक-लक्ष्मी प्रेस, सहरसा
प्रकाशक-कमला प्रकाशन, पटना
प्रथम संस्करण-जनवरी-१९९०
मूल्य-२५/-

जो
कहीं खोए हैं
उनके ख्वाब
टूटेंगे
जगे हुओं को
जगाए रखने को
ठोकरें
काफी हैं
यह संग्रह उनके लिए
जो
तंद्रा में पड़े
सुबह की
प्रतीक्षा कर रहे हैं।

……… मेरा विद्यार्थी जीवन समाप्ति की ओर है; पर आजीवन जीवन का अध्येता बने रहना कवि की प्रकृति है। बचपन से मेरी दो इच्छाएँ थीं। किसान बनने की या फौज में भर्त्ती की। हो सकता है, इसमें मेरी पढ़ाई से भागने की मनोवृत्ति ही काम कर रही हो, पर भविष्यत को मेरी जो तस्वीर पसंद थी उसमें मेरे हाथों में कलम थी। अब फ्रायड बता सकते थे कि ऐसा क्यूँ हुआ? उनके अनुसार भावनाएँ(कल्पनाएँ) अवचेतन में सु-सुप्त पड़ी रहती हैं जो मौका पा किसी न किसी रूप में प्रकट होती हैं; और हाथ में कलम ले शायद मैं दोनों ही काम कर रहा हूँ। कागज पर विचारों की फसल भी पैदा कर रहा हूँ और सामाजिक असंगतियों से मोर्चा भी ले लिया है; मैंने।

अज्ञेय ने 'नदी के द्वीप' के लिए शेली को उधृत किया था "मेनी ए ग्रीन आइल नीडस मस्ट बी इन द डीप वाइड सी ऑफ मिजरी। ऑर द मैरिनर, वोर्न एंड वान नेवर दस कुड वायज ग्रान" (कई हरे-भरे द्वीप अवश्य ही होंगे व्यथा के गहरे और फैले सागर में नहीं तो थका सागरिक कभी ऐसी यात्रा करता न रह सकता) मेरे जीवन की नदी में भी हरियालियों और फूलों से लदा एक द्वीप आया था। एक द्वीप जिसने माँजा मुझे, मेरी धारा को गति दी। एक द्वीप जिसने बाँधा नहीं, अपने स्नेह से पुष्ट कर आगे की यात्रा पर अग्रसर किया।

पिछले संग्रह 'समुद्र के आंसू' की छोटी सी कविता 'सच-झूठ' डॉ॰ प्रभाकर माचवे को अच्छी लगी थी "तुझे लगे/दुनिया में सत्य/सर्वत्र/हार रहा है/समझो/तेरे अंदर का झूठ/तुझको ही/कहीं मार रहा है"।

प्रस्तुत संग्रह में यदि मैं अपने युग के गतिशील सच को लेकर आगे बढ़ सका हूं; तो इसका श्रेय सुख्यात कवि आलोचक डॉ॰ रामविलास शर्मा तथा डॉ॰ प्रभाकर माचवे को भी जाता है जिनका स्नेहिल सहयोग मुझे मिलता रहा है। पूर्व के संग्रह पर डॉ॰ रामविलास जी ने लिखा था—"सामाजिक विसंगतियों के प्रति आक्रोश की एक लहर भी इन कविताओं में यत्र-तत्र विद्यमान है।" नये संग्रह में इन लहरों को एक धारा का रूप देने की कोशिश की है मैंने। धारा, कितनी वेगवती है निर्णय, आप करेंगे।

कर्म की निरंतरता को अपने लिए मुफीद पाया है मैंने। कर्म का फल वृहदतर कर्म के सिवा और भी कुछ होता है मेरी समझ में नहीं आता। मेरा कर्मयोग और कुछ दिला पाए या नहीं जनता के हाथ में एक हथियार की तरह थमा तो सकता ही है। देखूँ कितना कारगर हथियार बना पाता हूं खुद को। अनुज नीलू रंजन कुमार के शब्दों में—

"और
क्या दे सकता हूं तुम्हें
इस बारूदी ढेर से
मरणोपरांत
इन हड्डियों के
वज्र के सिवा।"

जमाने भर के लिए बेपनाह मुहब्बत से लबरेज आँखों वाले भईया महाप्रकाश तथा चिकित्सक कवि डॉ॰ शिवेन्द्र दास का आभारी हूं मैं जिन्होंने आधुनिक कविता के नये आयामों से मुझे परिचित कराया है। मैं आभारी हूं अग्रज कवि, व्यंगकार, समीक्षक श्री अरुण कमल, डॉ॰ बालेन्दु शेखर तिवारी तथा श्री मुकेश प्रत्युष का जिनकी सलाह, सहयोग तथा समालोचना ने मेरा मार्ग-दर्शन किया।

डॉ॰ बालेन्दु शेखर तिवारी ने लिखा था—"'समुद्र के आंसू' की कविताओं से गुजरना अपने समय की विसंगतियों और चिन्ताओं से गुजरने के समानान्तर है।" लगता है, समानान्तर होना ही काफी नहीं है अब। विरूद्ध, जाना पड़ेगा। बकौल मुक्तिबोध[1]-मेरे लिए; भावनाएँ लोहा हैं, इन्हें इस्पात बनाना होगा।

प्राचार्य निवास,
जिला इन्टर कॉलेज, सहरसा

२-११-८८

अमरेन्द्र कुमार 'मुकुल'

[1]मुक्तिबोध की पंक्ति अविकल रूप में यों है—"सचमुच, भावना लोहा है, सिर्फ उसे इस्पात बनाने की जरूरत है"।

कविता क्रम

पिता	१०
सबसे छोटा आदमी	१३
स्नेह की एक रेख	१४
कविता तय करती है	१४
दो और दो पाँच	१७
हमें सर पर पाओगे	१८
कागज की नाव	१८
जीवन की शर्त्त	१९
तू मुझे क्या मारोगे ?	२१
भूकम्प १९८८	२१
अवकाश थोड़ा दो	२२
संस्कार	२३
भूखे बच्चे	२५
बच्चे	२७
भाव विचार और क्रांति	२९
देश	३१
सभ्यता और जीवन	३४
चार-चर्मकार	३७
गलती	३८
जिंदगी ढूढ़ते लोग	३८
वो	३९
थोड़ा दूध थोड़ा भात	४०
आग	४१
बहारों से	४३
प्रयास	४३
आया शरद का विहान	४४
पवन	४४
गुलमुहर	४५
फूलचोभी	४६
पीपल की होली	४७
फुर्सत में एक चांदनी रात	४८
हरियाली की हत्या	४९
तड़पन ही जीवन है	५०
मीना कुमारी के लिए	५१
प्रीति	५१
भावना की शाख में (गीत)	५२
मौत की मनुहार	५२
हरसिंगार की डाली	५३
स्नेहमयी आंखों से	५४
प्यार का सफर	५४
चांद नहीं मांगूंगा	५७
गहने	५९
इतिहास	६१
राजनीति	६१
सभ्यता	६२
अंधकार	६२
पुनर्जन्म	६३
अंतर	६३
बदलाव	६३
व्यवस्था	६४
बेनजीर	६५
जीवन चुनौतियों से भरा है	६६
सलमान रश्दी की मौत का फरमान पढ़	६६
श्रद्धांजलि	६७
माडर्न राम	६८
भारत बंद एक न्यूज रपट	६९
मिथिला यूनिवर्सीटी	७२
ये हाथ	७३
जवानी बांटने की जरुरत है	७३
माफिया संस्कृति के प्रति	७४
थ्येन आन मन चौक पर	७४
ग्लोब पर ग्लासनोस्त	७७
लड़ेंगे साथी	७९
कविता की आत्महत्या	८०

★

पिता

अपनी छोटी गुदाज हथेली में
पिता की अंगुलियाँ थामे चल रहा था मैं
दूर सामने बहती नदी तक जाना था मुझे
नन्हें पाँव थकने लगे थे रोने लगा था मैं
बिठा लिया था पिता ने तब कंधे पर अपने
बालों से उनके खेलने लगा था मैं निकटाने लगी थी नदी
पर सूरज ऊपर कसा जा रहा था
रोने लगा था मैं दुबारे
उतार दिया पिता ने तब चिलचिलाती रेत पर
बिल-बिलाकर चिपक गया था मैं बाहों में उनकी

फिर पास आ गई थी नदी
भीगी रेत पर घरौंदे बनाए थे मैंने
चिल्ला-चिल्लाकर बुलाया था पिता को
आओऽ देखो यह घर मेरा अपना घर
पर पिता से पहले आ गई थी एक लहर
रूँआसा हो गया था मैं भयभीत भी
कि मेरा घर बहा ले जाने वाली यह लहर
मुझे नहीं ले जा सकती बहा कर ?

अब कह रहे थे पिता
चलो तैरना सिखला दूँ तुम्हें रोने लगा था मैं
पर कितने कठोर थे पिता !
दु:साध्य था कितना
इतिहास की सुरंगों से
वर्त्तमान के काल-खण्डों तक
संचित
ज्ञान उनका

तब
ममत्व की बाहों में उठा
ले आए थे पिता
नदी की धारा में
धीरे से छुलाया था
सतह से नदी की
बोले मारो हाथ-पाँव मारो
चीखें मारने लगा था मैं
और टप से छोड़ दिया था पिता ने
धारा में मुझे
बहता हाथ-पाँव चलाता
डूबने लगा था मैं
समाने लगी थी नदी
मेरी आंखों में बाहों में रगों में
थोड़ा-थोड़ा होश
खोने लगा था मैं

आंखें खुलीं तो टंगा था मैं बाहों में पिता की
सोचा था कितनी लम्बी हैं बाहें पिता की
लहरों से भी लम्बी
क्याऽ मैं नहीं हो सकता पिता की तरह
किनारों को छोड़ धारा में बना नहीं सकता घर
और कूद गया था मैं
बाहों के बल नदी में
आंखें खुली थीं भाग रहा था धारा में मैं
मत्स्य कन्याओं के आगे पीछे
देखता छू-छू कर तल में फैली कौड़ियाँ सीपी सिवार
बचता मगरों घड़ियालों के जबड़ों से
थकने लगता
तो लहरों से भी लम्बी पिता की बाहें
थाम लेती थीं मुझे

आज हो चुका हूँ कद्दावर पूरा
छूने लगे हैं नदी का तल मेरे पाँव
और हाथ सहला रहे हैं चेहरा सूरज का

अब पिता हैं कि मानते नहीं मुझे
कहते हैं वहीं तक जाओ
लौट सको सुरक्षित जहाँ से, मेरी बाहों में

पर तुम्हारा यह पवित्र मोह
हमारे अंतर के भविष्योन्मुख उर्जस्वित आवेग को
बांध सकेगा पिता ? खुद बंध सके थे तुम !

सबसे छोटा आदमी

जिसे भी
प्यार करता हूँ
महसूसता हूँ कि मुझसे
बड़ा हो गया है वह
और पाता हूँ कि मैं
दुनिया का
सबसे छोटा आदमी हूँ।

स्नेह की एक रेख

मैं
विश्वास का कैलाश उठाए
हिमालय से यहाँ तक
आ गया हूँ मेरे दोस्त
मेरी अजानुभुजाएँ सक्षम हैं इसे
सत्य की धरती पर
प्रतिस्थापित करने में
और इसे मैंने
अपना सर देकर ही नहीं
श्रम-स्वेद बहा अर्जित किया है
कि इस मरु को सब्ज देख सकूँ
विष्णु का छल
अब मेरा बल घटा नहीं सकता
क्यों कि हमें समुद्र नहीं
एक और सुरसरि लानी है
ऐसे में मुझे
तुम्हारी टेक की नहीं
स्नेह की एक रेख की
जरूरत है ।

कविता तय करती है

जानते हुए कि कविता
व्यक्तित्व चमकाने की चीज नहीं
एक मुकम्मल बयान और शब्दों में
आदमी होने की तमीज है
जानना चाहोगे तुम
कि कविता क्या है कैसे यह
महबूबा के ओंठों से ?
गुलमुहर की शाखों पर खिलती हुई
सड़क पर बिखरे
आदमी के खून तक का सफर
पूरा करती है
कविता
रोटी की फसल पैदा कर सकती है
यह व्यक्ति को सार्वजनिक करती है
या सार्वजनिक को व्यक्त ?

अपनी छोटी सी समझ से
हम हैं इसी से कविता है
यह हमारे होने का प्रमाण है
कविता मैं से
तुम या वह होने की छटपटाहट है
बतलाती है यह कि तटस्थता
हिजड़ों की अक्षमता ढकने को
एक सुंदर भाव-बोध है
और समष्टि से संलग्नता
उर्वर होने की शर्त

यह वसंत से

कोयल की कूक और बौरों की गंध का
सम्बंध साबित करती है
यह बतलाती है कि कैसे
शून्य में दागे गए
चुम्बनों के चिन्ह
प्रिया के रुखसारों पर
सिहरन पैदा करते हैं
यह सिखलाती है कि
नियान लाइटस की रौशनी
हमारे अंतर का अंधकार
दूर नहीं कर सकती ।
कि ध्वनि व प्रकाश के वेग से
दौड़ें हम धरती
लम्बी नहीं होने को
कि एकता मरे बेजान केचुओं का
समूह नहीं
बंधी हुई एक मुट्ठी है

यह बंदूक की नली से
भेड़िए और मेमने का
फर्क करना सिखलाती है
कविता तय करती है कि कब
चुल्हे में जलती लकड़ी को
मशाल की शक्ल में थाम लिया जाए ।

या अन्य

ढेर सारी गाठें
जिन्हें कोई नहीं खोलता
कविता खोलती है
जहाँ कहीं भी गति है
वहीं जीवन है और कविता भी ।

दो और दो पाँच

जब भी मैं
खून-पसीने की कीमत पर भरी
अपनी जेबें देख खुश होता हूँ
तुम्हारे गणितीय आंकड़े तेजी से
बदलने लग जाते हैं
सिद्ध करने लग जाते हैं कि
कमाई में मेरी
तुम्हारा भी हिस्सा बनता है क्यों कि तुम
वाजिब को गैरवाजिब साबित करने की
ताकत रखते हो
मानना पड़ता है मुझे कि
दो और दो पाँच होता है
मैं मुस्कुराता हूँ तुम खुश होते हो
पता नहीं है तुम्हें मुस्कुराहट को
विकृत होने से बचाने में
कितना जोर लगाना पड़ता है मुझको
लगाउँगा उतना ही जोर और

इस हिसाब को तुम्हारे
जेहन की किताब से मिटाने में।

हमें सर पर पाओगे

ओ प्रलय वा महाप्रलय
कयामतखेज कारनामों से अपने
किसे डराने आये हो
प्रकृति की कृपा से आओ तुम
या हमारी गलतियों से
हिरोशिमा नागासाकी बन या जलावतरण लिए
मनु श्रद्धा बचेंगे हरियाली ना सही
जड़ रहेगी बीज बचेंगे
सितारों के तार नहीं बनाने वाले हाथ होंगे
बियाबाँ में बहार आएगी
कोयल गाएगी
तब आओगे तुम
हमें सर पर पाओगे।

कागज की नाव

नावें कागज की
बहुत बहाईं वर्षा में
बाढ़ अब भी धरती पर ही आती है

बहा ले जाती है अन-जन-धन

नावें कागज पर बहती हैं
देखता हूँ अब अन-जन-धन से भरी
चलती ही नहीं दौड़ती हैं नावें

तुम्हारा कहना है कविताएँ
कागज पर ही लिखता हूँ मैं
कविताएँ बचपन से
कागज पर लिखी हैं मैंने
बचपन में नावें खड़ी भी नहीं होती थीं
कागज पर।

जीवन की शर्त

तुम्हें पता है
खोहों की शक्ल के तुम्हारे
आवासों से ही निकलते हैं लोग
सड़क पर आते-आते जो
लकड़बग्घे में तब्दील हो जाते हैं।

मासूमों के चीथड़े कर उस पर
बच्चों की तरह रोने की उनकी आदत
अब भ्रम में नहीं डालेगी तुम्हें।

क्योंकि लकड़बग्घे को

शक्ल से नहीं गंध से
पहचानने लगे हो तुम

अब
जब तुम्हारे हाथों में रायफल है
कारतूस भरना निशाना साधना ब-खूबी
आ गया है तुम्हें
कंधे चौड़े हो चुके हैं
खौलते रक्त को भी तुमने
एक दिशा दे दी है

तुम्हें इंतजार करना होगा जब
गुमनामी के अंधेरे से सड़क पर आता साया
अपने पिछले पैरों को सिकोड़
लकड़बग्घे की शक्ल
अख्तियार कर लेता है

और
दबा देना होगा तुम्हें स्ट्राइकर
बेधड़क जीव-हत्या भय से मुक्त
क्योंकि बाली की हत्या पर
राम की सफाई अच्छी तरह
याद है तुम्हें कि
लकड़बग्घे की मौत
जीवन की शर्त्त बन गई है ।

तू मुझे क्या मारोगे ?

तू खफा है मेरे दोस्त कि अकेला मैं
तेरी नजरों में निरीह सत्य के साथ
बराबर जीत कैसे जाता हूँ ?
हताशा और हार की खबर
मेरे कंधे और चौड़े कैसे कर देती है
तो बता दूँ ? झूठ की फौज अंधकार की सुरंग
तेरे अंदर के नन्हे सत्य को मार नहीं पातीं
मुझे क्या मारेगी
फिर अंतिम जय का विश्वासी वो नन्हा सा सत्य ही तो
सम्बल है मेरा
तेरा अंधकार फिर चाहे जो पैदा कर ले
वह नहीं पैदा कर सकता
जिसका एक कतरा उसकी पूरी कौम के विरुद्ध
भारी पड़ता है ।

भूकम्प–१९८८

कुछ लोग कह रहे खुदा अभी जिन्दा है
जाने वह कैसा है
अपनी कारस्तानी पर खुश है कि शर्मिंदा है
गर ये विध्वंस ये बरबादियाँ खुदाई हैं
तो जाकर कह दे
ताउम्र उससे मेरी लड़ाई है

अगर यह जीतने का लहजा है
तो बाकी बहुत जो हमने सरजा है
तोडे भी देखें कहाँ तक तोड़ता है
झुकते हैं हम कि खुद वो आकर हाथ जोड़ता है
कहोगे हार-जीत वक्त बताएगा
हमारे बिन वो कहाँ तक जाएगा
बीतते हम हैं समय बहाना है
जीते हैं अब-तक जीतते जाना है
मंजिल दूर है तो यहाँ भी हाथ-पाँव बहुत
हवा विपरीत है तो चढ़ चुके यूँ ही हम चढ़ाव बहुत
देखें भी लड़ाई कहाँ तक जाती है ?
मिटते हैं सफर में हम कि मंजिल राह में रह जाती है ।

अवकाश थोड़ा दो

पा ली ऊँचाइयाँ एवरेस्ट की माना
मत भूल ऊपर और भी आकाश बाकी है
अपनी भी दो बाहें दो मजबूत जंघे हैं
हमारे हौसले में भी
समंदर खेलता नदियाँ लहर लेतीं
अवकाश थोड़ा दो बता दूँ
लगन वालों से धरती है नहीं खाली ।

संस्कार

अक्सर कहती है माँ
बेटा के करतब करऽ
त बेटा - नाऽ त मेटा

कि बेटा
जहाज से नहीं
कार से घुमाए ही
छप्पन ना छः ही व्यंजन खिलाये
महल, अटारी नहीं
कोठी तो बनाए ही

कितनी संतोषी है माँ
इतनी सी संतुष्टि के लिए
कितना करतब
दिखाना पड़े बेटे को

शर्म आती है
कि बेटा होकर भी
करतब दिखाना ना आता मुझे

ये नहीं
कि मेरे हाथ - पाँव कमजोर हैं
या जल्दी थक जाते हैं
पुख्ता हैं ये और उर्वर भी
पैदा कर सकते हैं—
नई फसल या मूल्य

अब करतब दिखाना
ना आया तो ना आया

यूँ रौंद सकते हैं
सारी दुनिया मेरे पाँव
पर बिना दौड़े मैदान मारना
आज तक नहीं आया !

अब झोंपड़ा
पसंद है मेरी
पाँव - पाँव चलना आता है
साग - भात भाता है
या यूँ कहें
ये सीमाएँ हैं मेरी मजबूरी है
सच बोलना भी आता है
पर यह कोई करतब तो नहीं

कहीं
यह तो नहीं समझ रहे
कि किसी से कम प्यार करती है
मुझको मेरी माँ
किसी से भी ज्यादा घनी है
मुझ पर ममता की छाँव

पर
कहीं गड़बड़ जरूर है
या तो
प्यार के
संस्कार
बदल गए हैं
या बेटे का मतलब
(सुंदर बहू तो कदापि नहीं)
कार - कोठी और फ्रिज हो गया है

तुर्रा यह
कि वो
कुछ लादकर
थोड़े ले जाएँगी ।

भूखे बच्चे

अभी सूरज डूबा है
पश्चिम में एक तारा चमक रहा है

नहीं जानता मैं कि यह
वृहस्पति है या शुक्र
पर चाँद को भी इसके पास रहना
अच्छा लगता है मुझे भी इसको देखना

पक्षियों का झुंड
तारे की दिशा में उड़ा जा रहा है
वे भी तारे को ताक रहे होंगे
या उन्हें घोसलों में पड़े चूजों की
याद सता रही होगी

असहाय बच्चे
कितने खुश होंगे जब
चिड़िया लौट आएगी

पर जिनकी माँ को बहेलिए
पकड़ ले गए होंगे
उन बच्चों को यह तारा
कैसा लगता होगा ? वह माँ
बच्चों के बारे में सोच रही होगी
या अपनी नन्हीं सी जान के बारे में

अगर
वह चिड़िया कहे
कि - हे बहेलिए,
अभी मुझको जाने दो—
मैं अपने बच्चों से मिलकर
वापस लौट आऊँगी—
तो क्या बहेलिया उसे
वापस जाने देगा ?

अगर
चिड़िया लौट आए तो क्या बहेलिए को
दया आएगी उस पर
और बहेलिए को दया आ ही जाए
तो उसके बच्चे उसके बारे में
क्या सोचेंगे ?

बच्चे
दूध रोटी और गेंद से
ज्यादा भी
कुछ समझते हैं !
भूखे बच्चे
चाँद - तारे नहीं मांगते
बस रोते हैं
चीं - चीं - चीं ।

बच्चे

अचानक आई पहली वारिश
अच्छी लगती है
स्कूल से छूटे वच्चे सड़कों पर
चहक रहे हैं - पैरों में

चप्पल पहनने की बाध्यता नहीं है
हाथ में ही नहीं सर पर भी उसे
रख सकते हैं आज वो
उनके पास एक तर्क जो है
मैं क्या करता अम्मा ! बारिश
इतनी तेजी से अचानक आ गई कि

और उसकी क से कलम वाली
बड़ी सी किताब भी
पानी में लिथड़ा गई है - पर आज उसे
कोई डाँट नहीं सकता
जानकर तो उसने
फाड़ी नहीं है किताब
अपनी नन्हीं बाहों में
कहाँ छुपाता वह
इत्ती बड़ी सी किताब !
चलो नई आ जाएगी
बबलू से भी नई ।

फिर
सफाई भी ना देनी पड़ेगी कि पैंट
इतनी जल्दी गंदला क्यूँ गई
अररे - फिसल गए कीचड़ में
वह देखने थोड़े गई थीं
कि हम ही खुद छपाक - छपाक
कर रहे थे पानी में ।

पर घर पहुँचते ही
स्वेटर पहनना पड़ेगा
ठंड तो लग नहीं रही
पर माँ को कौन समझाए
कि बच्चों को ठंड ज्यादा
नहीं लगा करती ।

भाव विचार और क्रांति

अभी जब पछुआ
ठंडा रही है मुझे
नवोदित सूर्य गर्मा रहा है
कैसी विचित्रता है कि विचार
सुबह की सरलता को परख रहे हैं
और भावना निकट अतीत के
पन्नों को उकसा रही है

और
विचारों के हिसाब-किताब से
उकताया मेरा मन भी
बहना चाहता है संग-संग उसके

फिर
क्या कर सकता हूँ मैं भी
सिवा-देखने के

कि ये भावशिशु किधर बढ़ते हैं
आगे विकसित हो
किशोर वय प्राप्त करते हैं
या विचार के हाथों
असमय मारे जाते हैं

पर
अतीत के पन्नों पर
तुम्हारा ही चित्र
उगता है मेरी दोस्त
मैं जो बातें करते-करते
हाथों पर हाथ रख देता हूँ
जिन्हें तुम
झटकती नहीं खींच लेती हो
विदा के समय हुलस कर
दो शब्द नहीं कह सकता

इस मद में आँखें
चाहे जितना उछल कूद कर लें
हाथ साथ नहीं देते
इसे सामाजिक स्वीकार जो नहीं है

घर में तुम्हारे चेहरे पर
लाख गुलाल मल दें
बाहर संग-संग हम
कोई हलचल नहीं कर सकते

और विचार
जिनका लक्ष्य और आगे का है
यहाँ क्रांति नहीं कर सकते

यूँ क्रांति भी अब
कोई अर्थ कहाँ रखती है ?

क्रांति !
जो कभी
जलती मशाल हुआ करती थी
विचारों का
जंगल बन चुकी है

जिसे देखो
एक ठूँठ उठाए
भागा जा रहा है;
भाग जा रहा है ।

देश

द्रुतयान दूरदर्शन और दूरबीन
देश नहीं चलाते मेरे दोस्त
तूने पढ़ा होगा कि वस्तुएँ
दूर से छोटी दिखाई देती हैं
तुम्हारी दूरबीन उसे बड़ा दिखा सकती है
पर तुम्हें पता होना चाहिए

दूरबीन तथ्यों को परिवेश से
काटकर दिखाती है

मान लो अपनी महबूबा को तुम
दूरबीन से देख रहे हो
उसका मुखड़ा देख तुम जान सकते हो
कि उसके दिल मे
गुद-गुदी हो रही है या
पल्लू काँटों में उलझ गया है
पर उसकी पीठ देख नहीं बता सकते
कि उस पर क्या गुजरी है

और जरुरी नहीं है यह कि
घूमती दूरबीन हरबार चेहरा ही दिखाए
क्यूँ कि दूरबीन घुमाते हाथों का
एक टाईम टेबल होता है ड्यूटी होती है
कुछ निर्देश होते हैं

फिर दूरबीन
आंखों की स्वाभाविक दृष्टि में
बाधक होती है उसके साथ
एक उत्सुकता जुड़ी होती है जो
भावना विचार और प्यार को
दबा देती है बाल सुलभ जिज्ञासा
जगा देती है
और देश के० जी० की कक्षा नहीं

अपनी दिलरूबा से दूरबीन द्वारा
इश्क लड़ा सकते हैं आप ?

कमप्यूटर
आंकड़े इकट्ठे कर सकता है
दूरदर्शन तथ्य जमा कर सकते हैं
ये आंकड़े और तथ्य बता सकते हैं
देश किस गति से चल रहा
देश चला नहीं सकते

तुम्हारे यान छींट देते हैं
मुट्ठी भर अन्न यहाँ वहाँ
कैमरे उन्हें खाते
चाव से कैद कर लेते हैं
संतोष कर लेते हो तुम
क्यूँ कि पढ़ा है तुमने
संतोषम् परम सुखम् तुम्हें याद है
बूंद-बूंद घड़ा भरता है
मान लेते हो तुम कि देश भर गया

पर जाने कब समझ आएगी तुम्हें
कि पाई-पाई तिजोरी भरती है
पेट नहीं

अब उद्देश्य
तिजोरियाँ भरना हो
तो हमें कुछ नहीं कहना

हमारे रास्ते हैं पांव हैं
मंजिलें हैं तरीके हैं
हम तय कर लेंगे रास्ता
आप कर सकते हैं इंतजार
अगले
चुनाव बाढ़ या सूखे का
कि खाली तिजोरियाँ फिर भर सकें।

सभ्यता और जीवन

जंगल को पूरी तरह
समाप्त करने की कोशिश मत करो
ऐसा करना अपना अस्तित्व
संकट में डालना है
जंगल का नहीं

जंगल
जब चाहे पैदा कर सकता है
तुम्हें तुम्हारी सभ्यता को

सभ्यता का अर्थ जंगल से
अपना अंतराल बनाए रखना है
उसका अंत करना नहीं

जंगल मतलब
अंधकार बुद्ध अमरता

सभ्यता मतलब
प्रकाश मार्क्स जीवन

जंगल अमर है
विचार अमर होते ही
जंगल बन जाता है
उपयोगी बन जाता है
उसे जलाकर हम
प्रकाश कर सकते हैं

मार्क्स तब-तक जिंदा है
जब-तक हमारे अंदर वह
बराबर
जन्म ले रहा है मर रहा है
जिस दिन उसे
अमर करना चाहा
वह बाहर आ जाएगा
बुद्ध हो जाएगा
पूजनीय हो जाएगा
उसका विरोध
नहीं कर सकते तुम
उसके आगे
सर झुका सकते हो
उसकी शरण में
जा सकते हो

कभी
सर उठा कर देखो
तुम्हारे अंदर का
मार्क्स
जी उठेगा
उससे
बहस कर सकते हो तुम
बहस-मुबाहिसे के
अपने खतरे हैं
जीवन के भी ।

चार-चर्मकार

जन-चार
भार* लिए कंधों पर जा रहे
हिम्मत सबकी
हो रही तार-तार

मृत्यु का बोझ
हो रहा भार है
त्याग दें भार तो
जीना दुश्वार है ।

* मृत मवेशी

गलती

आज सूर्य की किरणों के साथ
अंधकार ही नहीं टूटा था
टूटी थीं झोपड़पट्टियाँ गुमटियाँ
कच्चे मकान चीथड़ों की टट्टियाँ
जहाँ पलता था
सूखी आंतों का भूखा सपना
जिसे अपना करने में
भगवान का भी जोर नहीं चलता था
वो ही भूखे सपने वाले रुखे लोग खड़े थे
किंकर्त्तव्यविमूढ़ सड़क पर

उसकी जिजीविषा ने कानून का
उल्लंघन किया था तोड़ा नहीं था
कच्ची धारा को मरोड़ अपना पक्का मकान
उस पर जोड़ा नहीं था।

जिंदगी ढूढ़ते लोग

पता है आपके आस-पास
ऐसे भी लोग हैं
ढूढ़ते फिरते जो जिन्दगी
गलियों में सड़कों पर चौराहों पर
रेल की पटरियों पर
अथवा कब्रगाहों पर

हमसे जुदा इनकी जिन्दगी
कितनी अजूबी होती है
जो भी हम जहाँ कहीं फेंक देते हैं
वहीं अपनी जिंदगी ढूँढ़ लेना
उनकी खास खूबी होती है

पटरियों पर कोयले की शक्ल में पड़ी
चौराहों पर कचरे की कब्र में गड़ी
अड़ी पड़ी रहती है जिन्दगी इनकी।

वो

रुई के फाहों में दुबके ठंडक को कोसते
जब सुबह का इंतजार कर रहे होते हैं आप
वह पानी में खड़ा
नजरें पोखर की सतह पर जमाए
जाल के रेशों की धड़कन तौल रहा होता है
सतह की हर छोटी-बड़ी हलचल
उसके माथे की त्योरियों को
हँसाने की कोशिश में विकृत कर जाती है
महसूसने लगता है वह
चूल्हे पर सिकती रोटी की गर्मी
और अंधेरे में अंदाजता हूँ मैं
उसकी आंखो की चमक जो ठीक वैसी है

जैसी-बच्चों के चेहरे पर
ढेरों खिलौने दिए जाने पर पायी जाती है ।

थोड़ा दूध थोड़ा भात

बहुत सी माएँ
जब अपने फूल से बच्चों के माथे पर
रिबन से तारे टांक रही होती हैं
उसने अपने बच्चों से कहा
जा खेत से अपनी गैया के लिए
रोटियाँ उखाड़ ला
तुझे दूध-भात अच्छा लगता है न !

बच्चों ने ओड़िया भर रोटियाँ उखाड़ दी
खेल-खेल में
माँ ने दूध में पानी मिला
पिला दिया बच्चों को
बताया थोड़ा दूध बछड़ा भी तो पीता है
और तुझे भात भी तो चाहिए
बदल लाती हूँ भात दूध से
जा तब-तक भात के लिए उपले बटोर ला

बच्चे चले गए उपला बटोरने खेल-खेल में
बच्चों को पता होता उन्हें यह खेल
जिंदगी भर खेलना होगा
खेल का आनन्द चूक जाए

तो भी उसे झेलना होगा
तो वो उखाड़ते बचपन से ही
और ज्यादा रोटियाँ बटोरते और उपले
ताकि पड़ोस के सभ्य लोगों की तरह
जमा कर देते वो भी लॉकर में
थोड़ा दूध थोड़ा भात
अपने भूखे भविष्य के लिए ।

आग

कोई चेहरा राख हो
तोउससे छेड़-छाड़ मत करो
हो सके तो उसकी आँखों में झाँको
एक आग मिलेगी वहाँ
उससे बच सको तो डरो

उसकी आँखे भी कभी
निर्मल निर्झर थीं
पर जिनकी आंखों का पानी मर चुका था
फूटती थीं देख-देख

सो उसे इतना खिलाया अपने बाप का नमक
कि चुकाते-चुकाते
मरा नहीं टूटने लगा
उसकी आंखों का पानी
और जब उसकी रुखी जीभ सूखे ओठों पर

आंसुओं में नमक तलाश रही थीं
. जल उठी उसकी काया भक से

तुम्हारी आंखों में पानी हो
तो बेधड़क
चूम सकते हो उसका चेहरा
पानीदार लोगों को
नहीं जलाती आग कोई भी

उतार सकते हो तुम
अपने भीतर वह आग
सर्द खून में उबाल ला सकते हो
जिनका पानी अभी मरा नहीं हो
जिला सकते हो उन्हें
या जिसका पानी सूख गया हो
उसे जला सकते हो ।

बहारों से

तूफानों चक्रवातों झंझावातो से
जीतता आया मेरा मैं
बहारों से
अक्सर हार जाता है ।

प्रयास

हम खड़ी करते हैं
नई दीवार नई मेड़ लगातार
नदी मिटा जाती है इन्हें बार-बार
क्यूँ ना हम
सारी दीवारें आपस की
सारी मेड़ें अलगाव की
विसर्जित कर दें
प्रवहमान नदी के कछारों पर
(शायद नदी विचारे !)

आया शरद का विहान

बादलों ने रुप बदला
कोहरा बन भर-भरा गए भू पर
नीला आकाश ऊपर
नीचे हरी दूब रही उभर
गेंदे के गात नए भए विकसित
शीत का सरस स्पर्श पाकर
शरद की शोख सुर्ख छटा देख
क्षितिज के छोर पर क्षण-क्षण ठिठक
चल रहे दिनमान आया शरद का विहान ।

पीले पौध धान के बिलगाए कृषकों ने
खेतों से ला रहे खलिहान
गा रही हैं गान (ओही धान के चुरा कुटाय
उ चूड़ा पंडित जी खास पंडित जी खाके दिहें असीस
जीअ सरवन लाख बरीस) ग्राम बालाएँ
भरा अणु-अणु में प्राण
आयी जन-जन में जान आया शरद का विहान ।

पवन

पवन कहाँ से आते हो तुम ?
कहाँ चले जाते हो ? या कहीं नहीं जाते !
पंछी का कलरव सुमन की सुरभि प्रिया का नेह
इतना कुछ कैसे पचा जाते हो !

तभी सबको भाते हो !

इतनी प्यारी नींद भी तो साथ लाते हो
नींद में सपने होते हैं
सपने में तुम सी अल्हड़
मेरी प्रियतमा होती है
मेरी तरह उसे भी गुद-गुदाते हो
इसीलिए गाते हो !

गुलमुहर

भई गुलमुहर
खूब खिले हो इस बार
ये लाली कहाँ पायी ?
मेरी महबूबा के ओठों से
चुरा तो नहीं ली !

मुहर इतने लजीले क्यूँ हो ?
क्यूँ हर साँझ छुपा जाते हो
धूल में अपने गुल ?
वह तो नहीं शर्माती इस तरह
अजनबी जरुर बन जाती है कभी-कभार
तुम तो ऐसा नहीं करोगे ?

बड़ी दूर से आया था
धूप के मील पार कर

पर तुम भी मेरे प्यारा की तरह
छाँव-गन्ध विहीन निकले
या तूने भी छुपा लिया है उसे
आंचल में अपने

यह किसका शाप है दोस्त
कि सभी आते हैं दूर से
तेरे आकर्षण में बंधकर
और बैठ जाते हैं पड़ोसी पीपल की गोद
चुहल मचाते हैं
तुम परेशान तो नहीं होते ?

पर नहीं जाऊँगा मैं
नहीं जाऊँगा तेरा नेह छोड़ कर
नहीं चाहिए छाँव और गन्ध
यह दहकती आग
थोड़ी उधार दे दो न
मिला दूँ आदमी के खून में
पानी हो गया है
बिखर जाता है इधर-इधर
लोग निकल जाते हैं बेखबर ।

फूलचोभी

नन्हीं फूलचोभी

अमलतास की शाखों से उड़ी
और तीर सी अमा गई
मेरी बावली अहेरी आंखों में

ओ नन्हीं चिड़िया
यूँ धूल में लहा-लोट क्यूँ हो रही है ?
आली ! तू कहीं गेंदे सी
हरियाली तो नहीं ढूँढ़ रही ?

माना वह मिल भी जाए कहीं
लाली उतरने वाली है कल
गातों पर गेंदे के

ये सारा दिन आँखें मिलाते हैं सूरज से
तब पाते हैं उसे
मिला पाएगी तू आँखें सारा दिन सूरज से ?

पीपल की होली

यूकलिप्टस के पड़ोसी पीपल ने
अबकी होली में वह रंग जमाया
कि उसके सारे साथी दंग रह गए
सहस्त्रबाहु सी भुजाओं से
छिड़क रहा था वह सुग्गापंखी रंग
सुनहली आभा से दिप रहा था अंग-अंग उसका
अतिथि तोता-मैना और काली कोयलिया

सब लूट रहे थे महा भोज का आनंद
परसने का अंदाज भी था नया
हर शाखा पर पुष्ट पकवान थे बफेडिनर की तरह
बस खाने का ढंग था हिन्दुस्तानी प्योर
चोंच के आगे क्या चम्मच का चलता जोर ?
भोजनोपरांत अतिथियों ने गाया समूह गान
मस्ती में डूब गया सारा जहान
पता ही ना चला कैसे बीता दिन
चाँदनी से कब चह-चहा गया आसमान ।

फ़ूर्सत में एक चाँदनी रात

पश्चिमी स्वर्णपट की
रंगीन फिल्म का नायक सूरज
सो चुका था संध्या की गोद
पूरबी रजत पट पर श्वेत-श्याम रंगों संग
उतर रहा था चांद
साम्यवादी चांदनी की बाँह थामें
नीति रंग भेद की नहीं चलने वाली अब

मुहँ चिढ़ाते-चिढ़ाते
अंग्रेजी फूलों के ओठ काले पड़ गए
बेला ने अंजुरी भर-भर उलीचा
सुगंध स्वागत में चाँदनी के
पशुओं ने मांद त्याग राहत ली

तथाकथित सभ्यों ने भी मुखौटा उतारा
शामिल हुए झुंड में खुशी से

गुलमुहर-अमलतास के झगड़े समाप्त हुए
नहीं पूछता कोई
कि वासंती धूप तुम्हारे फूलों को देख
शर्मा क्यूँ रही
या सभी जोड़ों की तुम पर ही पहले
नजर क्यूँ चली जा रही
संतुष्ट हैं दोनों कि दोनों की शाखों पर
उल्लू उछल-उछल अपनी गरदनें हिला रहे ।

हरियाली की हत्या

बच्चे की अशक्तता के बहाने
हरियाली की हत्या का तर्क
उसकी अपंगता का इलाज नहीं
बंधन मुक्त कर
उसकी लचकदार संवेदना को
विकसित होने दो
फिर कोई फल दुष्प्राप्य नहीं
तर्कों से धरती और आकाश को
अलग नहीं कर सकते हम
और चीलों से बचनेका उपाय
डालियों की छटाई नहीं

मजबूत हाथों की सधी
निशानेबाजी ही हो सकती है।

१२-३-८९ के न० भा० टा० में
श्री पूरन मुदगल की 'धरती की
बात' कविता पढ़ कर।

तड़पन ही जीवन है

ताल को दिखा दो समंदर
बता दो तड़पन ही जीवन है
तड़पना सीख सका तो विस्तार पा सकेगा
हाल पर रहने की ठानी तो मर जाएगा
अपनी सच्चाइयों को जोड़े दुनिया से
सत्य की तौहीनी कैसी
मौत भी तो नित दिन
खिलवाड़ करती है जिन्दगी से
आदमी जीना कहाँ छोड़ देता ?

दिनकर जी की 'सीपी और शंख' की पहली कविता 'झील' (जिसके भाव पुर्त्तगाली कवि अलबर्त्तो द लकर्दा की कविता के आर्थर द्वारा किए गए अंग्रेजी अनुवाद से लिए गए थे) तथा श्याम विमल की अप्रैल ८७ के न० भा० टा० में छपी कविता ताल को तकलीफ होती है' को पढ़ कर।

मीना कुमारी के लिए

दर्द
तुम्हारी आँखों में नहीं
हमारी रगों में होता है
छू देती हैं निगाहें
उभर आता है दर्द
फफोले-फफोले
फफोले फूटेंगे सही
सहलाना अच्छा लगता है।

प्रीति

चौथाई दरवाजा खोल
निमिष भर नेह से निहारा क्या !
हारा गया मैं
जीतता ही तो जीतना कहाता ?
लहर भर पूरा देखा भी न था
और पटल पर पाटल सा चेहरा
उग - उग आता है।

भावना की शाख में (गीत)

रास्ता बढ़ता गया
पर कदम मेरे रुक गए
एक चेहरा खुब गया फिर
आज मेरी आँख में ।

हृदय की सूनी गली में
छुप गया कोई दौड़ कर
घने रोएँ उग गए फिर
कल्पना की पांख में ।

विचारों का बांध ऊँचा
तुप गया लहरों से फिर
नए पत्ते उग गए फिर
भावना की शाख में ।

मौत की मनुहार

हादसा हो या प्यार
बेतहासा याद आती हो मेरी दोस्त
इस भूस्खलन को ही लो न
सूर्य की भाषा ने
अंधकार का मौन
तोड़ा भी नहीं था
तुम्हारा मौन मुखर करते-करते
चेतना उँघने लगी थी
लगा लाजवन अंगुलियाँ
जगा रही हैं मुझे
तंद्रा टूटी तो जाना
तुम्हारी नहीं
मौत की मनुहार थी वह ।

हरसिंगार की डाली

जब भी यादें तुम्हारी
जेहन में कौंध जाती हैं
क्षण को अखंड विचार मेरे
उतराने लगते हैं
भावनाओं के सैलाब में
लगता है हाथों में
हरसिंगार की डाल आ गई हो
जिसकी जड़ें
रगों में फैलती जा रही हों
हर धड़कन के साथ बढ़ती जा रही हों
यहाँ तक
कि पूरी पौध तैयार हो जाती है
नजर की चाँदनी चुभने लगती है
और और लगता है
हंसी की सुगंध बटोरते बटोरते
विचार

अंधे होते जा रहे हैं,
अंधे होते जा रहे हैं।

स्नेहमयी आँखों से

हेरा था
स्नेहमयी आँखों से
पछाड़ों को थामती
उर्मित दृष्टिकोरों पे
देती रवानी
रक्त-धार को नयी
मुखर मौन से
मम अंतर मथ
रंजना की
सुस्मित मधुपोरों से
रंजक मन मुकुल
मुकुलित कर
अनंत की सीमा में
रेखा से बांध
दिया मुक्ति का वर।

प्यार का सफर

जवानी तक आते-आते जब
बचपन की मुस्कुराहट कैशोर्य का चुलबुलापन
जा चुका था
भविष्य की चिन्ताएँ रोजगार के मसले
परेशान करने लगे थे सारी बाधाएँ
जो नया पथ ढूंढ़ने वाले के रूबरू होती हैं
आ खड़ी हुई थीं लग रहा था
जिंदगी कुछ भी नहीं सिवा दौड़, धूप, परेशानी के
बढ़ा जा रहा था मैं तेजी से
अनामी डगर अनजानी मंजिल की ओर
प्रवाह में अपने ही बाधाओं से बंधता
छूटता तोड़ता टूटता
बीत रहे थे दिन जगरहीं थीं नित नई आशाएँ
दिशाएँ मिल रही थीं नया भोर
एक मोड़ पर मिली थीं तुम
सूरज सिर पर लिए
और बिखेर दी थी पथ पर
सहज, सरल; निश्छल; खनकती हँसी
वेग में बहुत हाथ मारा था मैंने
खनकती धारा से पार पाने को न पा सका
झुंझलाहट में पूछा था—यह कहाँ आ गया!
इशारे से कहा था तुमने
पथिक माथे की नमी सुखा ले
आंखों की धुंध साफ कर ले
दूर जाना है तुम्हें यह प्यार का द्वीप है
रूककर देखो तो
प्रवाह रूकने पर क्या होता है?

कैसे सीधी धारा में उछाल आता है
उछलती धारा कैसे झील में बदल जाती है ?
सूर्योदय देख किस तरह कमल खिलते हैं
याद है गॉगल्स लगाए एक दिन
रिक्शे से उतरी थीं तुम
मेरा संयम जवाब दे गया था
तुम्हारे पीछे मैं थोड़ा तेज चल गया था
राजेश ने कहा था—
आज हमारा सन्यासी भी डोल गया
मैं डोल गया था दुनिया की नजरों में
पहले भी डोला करता था मैं
दुनिया नहीं जानती थी
मन जिस-तिस पर आशिक हो जाया करता था
अब जब मेरा संयम केन्द्रित है तुम पर
तो दुनिया की नजरों में पीछे भागता हूँ तुम्हारे
मास्टर ऑफ आर्टस के लड़के प्रोफेसर तक
विश्वास करने लगे कि बरबाद हो रहा हूँ मैं
पर मैं बन रहा था पूर्ण हो रहा था
याद है मुझे तूने पूछा था एकदिन
आपने लिखी है—पुस्तक !
मानो दूसरे की किताब दे मजाक किया हो
क्या मिलता है आपको ?
भटकाव ! भटकाव से बड़ी मंजिल नहीं होती शायद
अच्छी कविताएँ हैं
पर मेरा नाम हटा दीजिए फिर नाम दे दिया
सहेलियाँ हँसती है

कहा था मैंने जमाना हँसेगा
पर तुझे जमाने की हँसी मंजूर ना थी
मुझे याद है तेरा मायूस चेहरा भी
जिसे सत्य प्यारा लगता था परिणाम नहीं
परिणाम के अभाव में सत्य
अधूरा लगता था लगता है मुझे
बस यहीं से अजनबी होते गए हम
आंखों को अब भी अजनबीपन बर्दाश्त नहीं होता
बातें कर लेती हैं वो
अजनबीपन अब मुझे भाने लगा है
मजबूरी है यह इससे परेशान
एक दिन आइने में शक्ल देखी चौंक उठा
तेरी शक्ल मुझे खुद में दिखाई देने लगी
ओठों पर हँसी की खन-खनाहट
आँखों में मायुसी
लगा इसी तरह धीरे-धीरे
सम्पूर्ण मुझमें दीखने लगोगी तू
तुझे ढूढ़ने अब दूर नहीं जाना होगा
ढूँढ़ लूँगा तुझको मैं आँखों में अपनी
गम-खुशी के गीतों में
जो मैंने तेरे नाम लिखे हैं
उन भावों में जो तुमसे सीखे हैं ।

चाँद नही माँगूंगा

प्यारी माँ तुझे क्या पता ? कि तेरे बेटे को

प्यार से जिसे राम-कृष्ण कहा करती थी तू
अनुपस्थिति में तेरी
एक वनवास भोगना पड़ा अकेला

लड़ना पड़ा हर पल आशंकाओं के दैत्यों से
आस्थाओं को तोड़ना पड़ा तड़पना पड़ा दर्द से
पछताना पड़ा गलतियों पर अपनी ही

तू होती माँ
तो गोद में मेरा सिर ले अंगुलियों से सहला
उसकी तपन कुछ तो कम करती
या डाँटती औरों की तरह नादानी पर तू भी

पर तू पूछेगी
चन्द्रमुखी सीता साथ थी नहीं
जिसके खोने का भय था ना भाई लक्ष्मण थे
जिनकी बेहोशी पर पछताना पड़ता

ओह माँ तू सचमुच भोली है
बहुत भोली माँ मुझे भी यह सब
एक शशिमुखी के लिए ही, सहना पड़ा

चाँद की चाहत क्या बुरी है माँ ?
देखो झूठ बोलने से काम ना चलेगा अब
बहुत बहलाया था तूने शीशे में चाँद दिखा-दिखा
अब और धोखे में ना आऊँगा
मेरी प्यारी माँ तू बिगड़ती थी न

कि बेटे दुनिया ऐसे नहीं चलती
बचाना चाहिए कुछ अपने लिए भी

सोचो माँ पहलीबार कुछ चाहा था अपने लिए
पर क्या बताऊँ माँ
मेरे ख्वाबों को जमाने ने इतनी ठोकरें लगाईं
इतने तेज नेजे धंसा दिए रूह में इसकी
कि घाव भरे नहीं हैं अबतक

देखो माँ अब कभी बदमाशी ना करूंगा ऐसी
कभी नहीं माँगूंगा चाँद तुझसे या जमाने से
खुद सूरज बनने की कोशिश करूंगा
जिससे लह-लहाती है यह धरती
और रोशन होता है चाँद भी।

गहने

क्या तुम्हारे लिए कोई लड़की भागी ? (आलोकधन्वा)

गहने जो पसंद थे मुझे भी
हाथ पाँव गले में डाल
घर से भाग गई थी वह लड़की
यहाँ तक कि भागती दिखने लगी थी
और मैं भी जो तमाम दीवारें लाँघ तोड़
यहाँ तक आया था उससे मिलने ही को
कि ये भी तभी होना था कि धरती फट गई

और गहरी खाई में कौंधने लग गए कुछ शब्द
जैसे-भूल भय भविष्य
मैं अंधों सा कूदता की लड़की चीखी
भगवान के लिए जान मत दो
भय हो रहा है मुझे इन शब्दों से
और और मैं औरत हूँ मुझमें
वह माद्दा भी नहीं कि साथ दे सकूँ आगे
अब मुझे लगा कि जान भी है मुझमें
कि मेरे उसके बीच ई मरदा भगवान भी तो है
और वह माद्दा वाली बात
बात साइंटिफिक भी है
पर यह समझ ना सका तब ना आज तक
कि ये बेमाद्दा औरतें पैदा कैसे कर देती हैं
माद्दावान पुरुषों को !
और गश आने लगा था मुझे
थक कर या देखकर वो शब्द
जो गहने की शक्ल में चमक रहे थे
उसके हाथ-पाँव तथा गले में !
शब्द कुछ यूँ ही थे शायद
फ्रैंक-एडवांस-वैल एडुकेटेड
और जिनसे जुड़ी जंजीरें बंधी थीं
उसके घरों में
जिन्हें परदे के पीछे से कोई खींच रहा था।

इतिहास

नंगे होते हो
तो डरते हो
इतिहास के पृष्ठों में
कि इतिहास नंगा है
मार-काट लूट-पाट नया नहीं
इतिहास में ही
सारा फसाद-दंगा है।

राजनीति

जिन्दा रहना हो
तो अडिग रहो
राजनीति चाहेगी
समझौता स्वतंत्र विचारों की बलि
तुम्हारा झुकाव पुलों की तरह
जनाक्रोश पार जाने को।

सभ्यता

बिस्तर पर आदमी नंग-धड़ंग होता है
उसका चेहरा स्याह बदरंग होता है

जरूरत नहीं
कि खुद को तहों से ढकते रहें
अथवा
सरेशाम नंगे चहकते रहें

सभ्यता
नाखून-बाल बराबर काटते रहना है
टूटन को सहना
नया जुड़ाव गढ़ते रहना है ।

अंधकार

अंधकार का सत्य सर्व-व्यापी है
घना है परिमाण में भी काफी है
प्रकाश को अस्तित्व मे आना पड़ता है
कहीं पहुँचने को हाथ-पाँव चलाना पड़ता है
अंधेरा है
जो हर क्षण हर जगह खामोश खड़ा है
कह सकते हैं आप
प्रकाश अंधकार से बड़ा है !

पुनर्जन्म

अब आदमी
पुण्यफल की धारणा से घबराने लगा है
आदमी में हो पुनर्जन्म
इसकी कल्पना से भी उसे पसीना आने लगा है
भई मिले जो योनि
जानवर की ही सही अभयारण्य तो मिलेंगे
टुकड़े पर पराये पलेंगे नहीं
प्रतिक्षण का डर तो होगा दूर
एक बुद्धि की खातिर कौन भय का भार सहे !

अंतर

बचाओ ! बचाओ !!
लोग बचना चाहते हैं इस पुकार से !
जानते हुए कि भेड़िया आया-भेड़िया आया है ;
और बचाओ बचाओ में
अंतर है ।
कि यह भेड़िये से बचने का उपाय नहीं ।

बदलाव

कौन कहता है ? कुछ नहीं बदला
रोने से चीखने अब चिल्लाने लगे हैं हम

चिल्लाहट को संयत करो
नारा बन जाएगा
नारा इनकलाब ला सकता है
प्यार और रोटी का इनकलाब ।

व्यवस्था

आदमी के दिल और दिमाग में
कब्ज पैदा कर देती है यह व्यवस्था
फिर बिजली से दौड़ते विचार प्रकट होते हैं
खण्डित गन्धयुक्त कुत्सा में
जिसे जवानी की गर्मी कह
अक्सर टाल दिया जाता है
इशारा होता है कि
जलूस हड़ताल और अनशन का
क्लिअरसिल लगाएँ हम
चेहरे ढकें गंध मिटायें जब-तक
सड़े विचार झुरियों में ना परिणत होजाएँ ।

बेनजीर

पैराहन-ए-दरीदां[1] में लिपटी
जिगर-फिगार[2] अवाम की
अफसुर्दा[3] आहों का मर्हम-ए-आजार[4]
संगीनों के साये चाक[5] करता
तमाम तवारिखों की तहरीरें[6] करता तार-तार
माह-ए-रवाँ[7] जो उगा है आज की शब[8]
फैज के लैला-ए-वतन के अफलाक[9] पर
दिलकश है बड़ी तस्वीर उसकी
सर-ए-रु[10] पर है जवानी का फरोजाँ[11] जमाल[12]
रगों में इंसानी मुहब्बत की तासीर[13] है
हाथों में है हजारों द्रौपदियों का चीर
पूरब की इस बेटी का नाम है बे-नजीर[14] बेनजीर ।

१. फटे वस्त्र २. घायल दिल ३. उदास ४. घावों का मरहम
५. फाड़ना ६. लिखावट ७. गतिमान चाँद ८. रात ९. आकाश
१०. चेहरा ११. उज्जवल १२ सौन्दर्य १३. मिठास १४. अद्वितीय

जीवन चुनौतियों से भरा है

आस्ट्रेलियायी आलराउन्डर साइमन ओ डानेल कहता है:-

जीवन चुनौतियों से भरा है
यह मोर्चा हर हाल में जीत लेना है
साइमन लड़ाई जीत लेता है
पर मेरे दोस्तो तुम लड़ाई नहीं लड़ सकते
साइमन मौत से कैंसर से लड़ा
जीवन के लिए नहीं लड़ सकते तुम
साइमन क्रिकेट के लिए मुहब्बत के लिए लड़ा
रोटी के लिए इज्जत के लिए नहीं लड़ सकते तुम
उठो मेरे दोस्तो
कि साइमन अकेला मौत को जीत लेता है
कि तुम सब मिल कर जिन्दगी को जीत लोगे ।

सलमान रस्दी की मौत का फरमान पढ़

एक चिड़िया का बच्चा
जब सूरज की तपिश से जलने लगा
तो जाने क्या सूझी
कि उसे बुझा देने की नीयत से
सर उठाकर उस पर थूक दिया

अब सूरज की सेहत पर
इसका कोई असर पड़ा या नहीं पता नहीं
पर सूरज के वंशधरों पर यह नागवार गुजरी

सो अस्त्र-शस्त्र ले पड़ गए नन्हीं चिड़िया के पीछे

आफत की मारी वह नन्हीं सी जान
नन्हे डैनों से लगी भागने इस लोक से उसलोक
उसे कोई शरण भी देगा यह अनिश्चित है
आखिर सूरज के वंशधरों के विरुद्ध खड़ा हो तो कौन ?

चाँद-तारे आपस में बतिया रहे हैं
कि इसे बस खुदा ही बचा सकता है
अब खुदा को कोई कहां ढूढे ?
और सुना है—खुदा और सूरज में गहरा दोस्ताना है
सबका ऐसा विश्वास है—कि चिड़िया का बचना मुश्किल है

सारे ग्रहों के कैमरे
चिड़िया पर नजर टिकाये हैं
कि चिड़िया मरे
कि एक हेड लाइन न्यूज तैयार हो
जिसकी जगह अभी खाली है ।

श्रद्धांजलि

प्यारे सैयद मोदी
बहुत कोशिश की तेरी याद में रोऊँ
पर आँखों में खून उतर आया
लोंगोवाल वैद्य पृथ्वीपाल अब भी आँसू शेष हों

बताओ—गोली लगी होगी
तो विश्वास हुआ होगा कि गोली ही लगी है
क्या तुम्हें अपना देश भारत
तब भी उतना ही सुन्दर लगा होगा ?
जितना कि किताबों में पढ़ा
या अमिता की आँखों में देखा होगा तूने
कैसा लगा होगा जब बुलेट प्रुफ खोल से प्रधानमंत्री
श्रद्धांजलि दे रहे होंगे ।

मार्डन राम

तुम्हें देखा इलाहाबाद के पथ पर
झोली फैलाये भिक्षा में मांगते सर (विवेक)
मुआफ करें गर पहचान ना पाया
हे राम आनन्द सागर राजीव नयन
ठहरे भक्त वत्सल ख्यालों का स्वीच ऑन किया नहीं
परदे पर आ गए स-दल-बल
पर कागभुशुंडी धोखा खा गए थे
मैं तो अदना सा सेवक ठहरा
हाँ एक शिकायत है शर्म आ रही है
आपकी दीपि-मालिका सी सीता को देखा
लेते अंगड़ाई निर्लज्ज सी शर्माते
यही कोई साबुन-ओबुन का परचार था
या 'रात के अंधेरे में' का
लव या बेडरूम सीन याद नहीं

सोचो भगवन्—इतनी वत्सलता भी क्या ठीक है ?
माडर्न कब से हुए
अभी भी बंदर भालू लिए फिरते हो
और जयंत की तो एक आँख ही ले ली थी
जरा सी धृष्टता पर

यही सब सोच भरमा गया महाराज
डाल दी भिक्षा राजर्षि की झोली में
और ब्रह्मर्षि नागा बाबा भी तो उसी पाँत में बैठे थे
अन्य सारे चाँद-तारे भी उसी पंडाल में
सज रहे थे डर रहा था मैं
कि एक ओर गुरुवर, ऋषिवर
दूसरी ओर साक्षात् गोबिन्द
भजन भी तो नहीं आता कि मना लेते बाद में गाकर
डिस्को पॉप जॉज
आपको भाता है कि नहीं पता नहीं
यूँ नारेबाजी आ गयी है
तो धीरे-धीरे सब सीख जाएंगे ।

भारत बंद एक न्यूज रपट

आँखों और कानों के भरोसे ना रहें
चन्द गोलबन्द विपक्षियों के झाँसे में न आएँ
सड़क पर नारेबाजी चल रही है
भाषा के बिगड़ने का खतरा बढ़ गया है

अपने मकान   दुकान   दरवाजे तथा खिड़कियाँ बंदकर
बैठक लगाएँ दूरदर्शन के आगे
चौबीस घंटे में तेइस बार   समाचार घर्षण   करेंगे हम
विश्वास दिलाने की कोशिश करेंगे
कि विपक्ष का   बंद   विफल रहा

बंद विफल रहा
एक लाख नजरबंद हुए   आँसूगैस छूटी गोलियाँ चलीं
मात्र   दर्जन भर लोगों की   शहादत   ली गई
ट्रेनें   आठ दस घंटे   लेट रहीं
आतंकवादियों की कार्यवाही   चालू रही
बंद का   उन पर   कोई असर नहीं
बेरोजगारों की संख्या में   इजाफा   नहीं रुका
और बंद विफल रहा
सैकड़ों घायल हुए
कम्यूनिस्टों द्वारा पीटने   पिटाने की
घटनाएँ   चालू रहीं
प्रियरंजन दास मुंशी तथा नृपेण चक्रवर्ती
स्मारक बनते-बनते बचे
बेअंत   बेंगलराव   के के और कल्पनाथ द्वारा
कांग्रेस की भाषाई संस्कृति की समृद्धि के
प्रयास   लगातार   जारी रहे   और बंद विफल रहा

आप उब रहे हैं
सारे राष्ट्रीय   अंतरराष्ट्रीय समाचारों को रोक कर
हम बंद की विफलता दिखा रहे हैं
धैर्य धरें   राजीवजी   आज

विकास के आंकड़े   दे देकर   बोर ना करेंगे
वो भी   बंद की विफलता पर   आख्यान बांचेंगे
बताएंगे   जनता ने किस तरह
विश्वनाथ   वाजपेयी   वसु को   नकार दिया
क्या ऽऽऽ
अरेऽ   गोली मारिए   वेद प्रकाश के शहर को
जब देखिए   ससुरा   कविता बुद-बुदाता है
इधर देखिए   आम आदमी के   झंडाबरदार
कमलेश्वर   कौनसा   कलमा   पढ़ रहे हैं
वो कह रहे हैं
कि बच्चे   दर्पण और टी० वी०   झूठ नहीं बोलते
राव वीरेंद्र   चतुर्वेदी और सुन्दरजी
सब पद के लोभ में   विपक्षी भेदिए   बन गए हैं
इनके इशारों पर   नाक ना दें
कान दें तो शंकरानंद और मोहन कात्रे के बयान पर
चन्द्रशेखर भी कह चुके हैं   राजीव भोले हैं
आंख दें तो बस इनकी भोली बातों पर
शान्त बैठिए   शोर क्यूं मचा रहे हैं
इतने सारे लोगों का   काम-धाम छुड़ा
इसीलिए तो लाया गया है   कि वो
आपको समझा सकें कि बंद विफल रहा

ओह   तो आप
थाना चौक पर हुए   जाम की   बात कर रहे हैं
आ गए न धोखे में   वह बंद की बदौलत नहीं
उसकी विफलता को   लाई गई   पुलिस

तथा उसके वाहनों से हुई रूकावट है

हाँ तो हम बता रहे थे कि बंद विफल रहा
भिखारियों ने भिक्षा मांगना बकायदा चालू रखा
बहुओं को जलाना बंद नहीं हुआ
दंगे भड़काऊ योजनाएँ निर्माणरत हैं
और तो और
जनसंख्या की वृद्धी दर पर इसका कोई असर नहीं
और बंद विफल रहा

सभी प्रेस चालू रहे
समझदारी इसी में होगी
कि कल का अखबार ना पढ़ें
वह भी बंद की विफलता से अटा होगा
बचत के हिसाब से एक और अमूल्य सलाह
अगले माह की पत्रिकाएँ भी ना पढ़ें
उनका सम्पादकीय भी
इन्हीं बातों से पटा होगा।

मिथिला यूनिवर्सीटी

मिथिला यूनिवर्सीटी ना परीक्षक ना टी० टी०
बे-टिकट सफर करें प्रथम श्रेणी में
इन्टर सीटी हो अथवा बाम्बे वी० टी०
शर्त्त हो राम लखन के गोतिया
किसी प्रोफेसर के पोता या नागो भाय के नाती
कोरा वहम है रहमान की रहम।

ये हाथ

भुलावा उनको दो जो भोले हैं
मिस्थेनिया ग्रेविश और दम्मे से
सड़ी-गली तेरी पेशियाँ हड्डियों का झाड़-झंकाड़
छुपा नहीं सकते अब
तुम्हारी मरती आवाज का भोंड़ापन
चावल से देश की दलाली तक का किस्सा
हर युवक खूब जानता है
तुम्हारे धोखे का लोहा वह जरूर मानता है
पर तुम्हारे खोखले डायलाग्स पर
ताली बजाने वाले ये हाथ
हाथ नहीं हथगोले बन चुके हैं
उड़ा देंगे जो पूरे प्रदेश से
बम्बइया प्रतीक पोस्टरों सहित तुम्हारा अस्तित्व।

जवानी बाँटने की जरूरत है

बातें अनसुनी कर
जवानी में सफेद हुए बालों पर तरस खाने वालों
तुम्हें पता नहीं इस मुल्क में
करोड़ों जवान हो नहीं पाते
कैशोर्य से बुढ़ापे में कदम रखता बचपना नहीं दीखता
उस पर गश नहीं खाते तुम तो दोष मेरा नहीं
यह बालों की सफेदी पर तरस खाने का वक्त नहीं
जवानी बाँटने की जरूरत है।

(मित्र भास्कर के कुछेक बालों की सफेदी के नाम

माफिया संस्कृति के प्रति

मजाक मत उड़ाओ ठहाके मत लगाओ
जान जब तक सस्ती और बंदूक मुफ्त है
कलम छोड़ना नहीं चाहता हाथ हैं अभी कड़े
मजबूर ना करो कि बंदूक उठाना पड़े

शिल्प की जरूरत नहीं ना इसमें दुम्रा चाहिए
चौबीस का हुआ नहीं
रोटी के लिए फौज में भर्ती का इरादा है
ऐसा न हो सुरक्षा बल को
सीमा छोड़ केन्द्र में आना पड़े
मजबूर ना करो कि बंदूक उठाना पडे

माना तुम्हारी आँखों पर चर्बी है चढ़ी हुई
पर हमारी भूख भी है कुछ बढ़ी हुई
भावनाएं अभी नियंत्रित हैं विचार हैं अभी प्रबल
जाओ बचो अरे दिखाओ ना ये दल-बल
ना हो कि खुद को
रक्त के प्रवाह में बहाना पड़े
मजबूर ना करो कि बंदूक उठाना पडे ।

थ्येनआनमन चौक पर

बंद मुट्ठी में
मजबूत अहिंसक इरादों

और हलकों में हक की आवाज लिए
चौराहों पर जिबह किए गए मेरे दोस्तो
अगर मैं
चेतनायुक्त बमों का समूह होता
तो फट पड़ता एक साथ
तुम्हारे मुल्क की तमाम लौह दीवारों पर
परखचे उड़ा देता उनकी जो
रोक रही हैं तुम्हारी चीखों को भी
बहराने से

पर मेरी पीड़ा तुम
समझ सकते हो मेरे दोस्त
मैं एक छोटा सा आदमी
जो बातें चाहे तो कर सकता हैं
इदं अहं अस्मि से अहं ब्रह्मास्मि तक की
पर जब उसे
कर्म में परिणत करने की
बारी आती है— तो
बताया जाता है
कि बड़ा है उससे
यह देश !
यह काल !
यह इतिहास !
फिर सिर थामकर सोचना पड़ता है उसे कि
इस छोटे से आदमी से—बड़ा

कैसे हो जाता है ?
यह देश ! काल ! इतिहास !

यह देश
तटस्थता के खोखले से
असंलग्नता का सिर निकाले यह देश
पूरी की पूरी कौम की मौत पर
गोहत्या के अपराधी की तरह गूंगा
हाथ बांधे खड़ा— यह देश
खून से लिथड़ी बाजुओं पर
मेमने के फर चिपकाए अड़ा यह देश
आदमी से बड़ा कैसे हो जाता है ?

उस आदमी से जो गले में
फांसी का फंदा डालते हुए भी
एक फूल की तरह खिल-खिल आता है
उस आदमी से-जो अकेला अपनी छाती से
बंदूकों और टैंकों को ठेलता
उसकी रेंज के बाहर कर आता है ?

और यह समय
जिसका बीतना
हमारे बीतने पर निर्भर करता है
कैसे बड़ा हो जाता है !
और यह इतिहास भी जिसे
बदल तो नहीं सकते हम पर आगे
उससे बेहतर बना सकते हैं

हमसे बड़ा हो जाता है ?

ग्लोब पर ग्लासनोस्त

ग्लोब पर
उत्तर पूर्व प्रदेश से उड़ता है
एक कपोत बार-बार
उसके डैने चूम कर
जो हवा चलती है स्पर्श से उसके
नक्शे पर के सारे के सारे फ्रंट और मोरचे
पलटते चले जाते हैं मैदानों में

और यह सच है कि अब उनकी पीठ पर
बंदूकें नहीं लाठी है और यह घर-घराहट
आर्टरिज से लदी लारियों और
बख्तरबंद गाड़ियों की नहीं
खेतों में दौड़ते ट्रैक्टरों की है

आगे दूर
पश्चिमोत्तर की पहाड़ियों के नीचे
फैले विस्तृत मैदानों में
जो साये भाग रहे हैं वह
क्लिनिक सैनिकों की वहशी प्लाटून नहीं
मेमने के पीछे भागती किशोरी है

तो क्या यह

उसी कपोत का करिश्मा है ?
जिसकी आवाज सबको भाती है जिसके पीछे
दुनिया की सबसे बड़ी नौजवान आबादी
पागल है

वह अंग्रेजी भी नहीं बोलता
कोई अपनी ही भाषा बोलता है
जरा नहीं शर्माता है
विश्वास कीजिए धोखा नहीं है यह
कि उसके डैनों में इस बार
बारूद नहीं भरी है
उसकी नजर ताजा हरी है

तो क्या
वह शांति का मसीहा है ?

पर
कबूतरों की तस्वीरों
और उनकी बातों से अटे पड़े
हमारे मुल्क के तमाम मकानात मोर्चों में
क्यूँ तब्दील होते जा रहे हैं
जब कि हमारे पड़सियों ने
अपनी सरजमीन से भेड़ियों को
बर्फ में ढ़केलना
शुरु कर दिया है हमारा उत्तरी सीमा-प्रांत
चीख रहा है भेड़िया आ रहा है

भेड़िया आ रहा है

जाने कितने वर्षों से भेड़िया आ रहा है
तो क्या वह घास खा रहा है या
हम ही मेमने हैं
या भेड़िया हमारे ही जेहन में छिपा
हम ही को चबा रहा है ।

लड़ेंगे साथी

लड़ेंगे साथी कि कोई जिन्दा जिन्दा है
कि व्यवस्था अभी भी मौत का कारिन्दा है
कि मांद में आदमी सड़क पर दरिंदा है

हथौड़ा बनेंगे साथी जवाब बनेंगे साथी
कसमें सारी पूरी करेंगे साथी

लड़ेंगे कि पेट रीता सूखी हुई घास है
लड़ेंगे कि पाँव बंधे प्रिया उदास है
लड़ेंगे कि जुल्म मिटा नहीं घुटन आस-पास है

बंदूक बनेंगे साथी विचार बनेंगे साथी

लड़ेंगे कि कुछ पाना शेष है
लड़ेंगे कि अंधेरे में देश है
ढंग सीखेंगे जरुरते जानेंगे

हम लड़ेंगे साथी कि हौसले बुलंद हैं

हम लड़ेंगे साथी कि गर्दिश के दिन चंद हैं

हम लड़ेंगे साथी

कि मुस्कराहटें तुम्हारी जेहन में अभी बन्द हैं ।

(पाश के प्रति)

कविता की आत्महत्या

कितनी भयानक होती है

कविता की आत्म-हत्या !

मौतें होती हैं

जैसे जलती भट्ठी में कुछ कोयले काले पड़ जाएँ

पर कविता की मौत

मानों भट्ठी ठंडी पड़ गई हो आग बुझ गई हो

कितना खतरनाक है आग का बुझ जाना

आग जिसे जलाया था

पुरखों ने पत्थर घिस-घिस कर

पीढ़ियों ने जिसे जिलाए रखा

श्रम से जतन से ।

(गोरख पांडेय के प्रति)

जन्म : १९६६
स्थान : तीर्थकौल (संदेश)
जिला : भोजपुर (शाहाबाद) आरा
परीक्षार्थी : एम० ए० (राजनीति विज्ञान)
प्रकाशन : समुद्र के आंसू (कविताएँ)
सभ्यता और जीवन (कविताएँ)
प्रकाश्य : मेरा गांव (कुछ लम्बी कविताएँ)

यह वसंत से
कोयल की कूक और
बौरों की गंध का
सम्बंध साबित करती है
यह बतलाती है कि कैसे
शून्य में दागे गए
चुम्बनों के चिन्ह
प्रिया के रुखसारों पर
सिहरन पैदा करते हैं

यह बंदूक की नली से
भेड़िए और मेमने का
फर्क करना सिखलाती है
कविता
तय करती है कि कब
चूल्हे में जलती लकड़ी को
मशाल की शक्ल में
थाम लिया जाए

या अन्य ढ़ेर सारी गाँठें
जिन्हें कोई नहीं खोलता
कविता खोलती है
जहाँ कहीं भी गति है
वहीं जीवन है
और कविता भी।

आधुनिक कविता में परिवेश के प्रति रचनाकार की संवेदनशीलता का स्पंदन अधिक मुखर हुआ है। काव्य रचना की एक समस्या यह भी है कि हम जीवन को किस अर्थ में ग्रहण करते हैं यह ग्राह्यता हमारे जीवन विवेक से ही निर्मित निर्धारित होती है।

"सभ्यता और जीवन" अमरेन्द्र कुमार 'मुकुल' का दूसरा काव्य संकलन है। इन रचनाओं में उन्होंने जीवन के विविध आयामों को छुआ है-प्रेम, प्रकृति मनुष्य, सामाजिक-विसंगतियां, और राजनीतिक विद्रूप। इन कविताओं में जीवन से लगाव सीधा; सघन और सक्रिय है। कहीं-कहीं अधपके जामुन की तुर्शी भी। ये कविताएँ पाठक को अपने भीतरी और बाहरी संघर्ष में साझीदार बनाएँगी।

—रामविलास शर्मा